अश्वगंधा हितधारकों की बैठक आयोजित

(20.05.2020, आईसीएआर-डीएमएपीआर, आणंद)

अश्वगंधा हितधारकों की बैठक: आज यहां भारत में कोविड-19 महामारी के मद्देनजर अवसर और चुनौतियां पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा के साथ आयोजित की गईं। यह बैठक डॉ. आनंद कुमार सिंह, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की अध्यक्षता में हुई। इसमें डॉ. पी. के. त्रिवेदी, निदेशक, सीएसआईआर-सीआईएमएपी, लखनऊ, डॉ. टी. जानकीराम, सहायक महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), आईसीएआर, डॉ. सत्यजीत रॉय, निदेशक, आईसीएआर-डीएमएपीआर, आणंद, डॉ. एच. एस. गुप्ता, पूर्व निदेशक, आईएआरआई, नई दिल्ली, डॉ. एस. के. श्रीवास्तव, सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ, डॉ. के. एन द्विवेदी प्रोफेसर, बीएचयू और डॉ. विधि बापना, आयुर्वेदिक कॉलेज, नाडियाड उपस्थित थे।

डॉ. ए. के. सिंह ने अपने संबोधन में किसानों की आय को दोगुना करने के लिए औषधीय और सगंधीय पौधों की क्षमता के साथ-साथ कोविड-19 महामारी के तहत प्रवासी मजदूर को बनाए रखने का सुझाव दिया। उन्होंने अश्वगंधा की क्षेत्रफल (एकड़ों में) के सटीक आकलन और गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए सेंसर के उपयोग और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग के लिए अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करने की सलाह दी।

डॉ. पी. के. त्रिवेदी, अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीआईएमएपी, लखनऊ के अश्वगंधा में अनुसंधान उपलब्धियों के अवलोकन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कच्ची औषधिओं की गुणवत्ता प्रमाणीकरण और अश्वगंधा की चिकित्सीय क्षमता के वैज्ञानिक सत्यापन की आवश्यकता है।

डॉ. जानकीराम ने अपने संबोधन में कहा कि, देश में अश्वगंधा की मांग और आपूर्ति में अंतर है, जिसे इस फसल में बीज श्रृंखला और मूल्यवर्धन को मजबूत करके संबोधित करने की आवश्यकता है।

डॉ. एच. एस. गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि, औषधीय और सगंधीय पौधों का उपयोग कर फसल विविधता देश में किसानों को आय सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। उन्होंने खेती के लिए सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले रोपण सामग्री सुनिश्चित करने के लिए एक प्रमाणन एजेंसी स्थापित करने का सुझाव दिया। उन्होंने अश्वगंधा में किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को किसानों के लिए सर्वोत्तम बाजार मूल्य का पता लगाने का भी सुझाव दिया।

डॉ. एस. के. श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि, अश्वगंधा में उपलब्ध रसायन विज्ञान की विविधता पर इको-भूगोल की भूमिका के अन्वेषण की आवश्यकता है।

डॉ. के. एन द्विवेदी ने कहा कि, दुनिया भर में कोविड-19 महामारियों के कारण अश्वगंधा की अधिक मांग है। अश्वगंधा की चिकित्सीय क्षमता को स्थापित करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।

डॉ. वी. बापना ने अपने संबोधन में, आयुर्वेद में अश्वगंधा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न मानव बीमारियों को ठीक करने के लिए अश्वगंधा से विभिन्न आयुर्वेदिक दवाओं को विकसित करने का सुझाव दिया।

इससे पहले, डॉ. एस. रॉय ने आईसीएआर-डीएमएपीआर की उत्पत्ति और अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करने में अश्वगंधा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

डॉ. पी. मणिवेल, प्रधान वैज्ञानिक, ने निदेशालय में आनुवंशिक संसाधनों, विभिन्न विकास, फाइटोकेमिस्ट्री और अश्वगंधा के अन्य पहलुओं में अनुसंधान उपलब्धियों की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की।

बैठक का मुख्य उद्देश्य भारत में कोविड-19 महामारी के मद्देनजर अश्वगंधा में अवसरों और चुनौतियों का सामना करना है। अश्वगंधा भारत में उगाया जाने वाला एक लोकप्रिय औषधीय पौधा है और व्यापक रूप से प्रतिरक्षा वर्धक के रूप में उपयोग किया जाता है। ऑनलाइन मीटिंग में शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, वैद्यों, किसानों, व्यापारियों, निर्यातकों, एक्सट्रैक्टर्स और नीति निर्माताओं के 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अंत में, आयोजन सचिव डॉ. पी. मणिवेल, ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

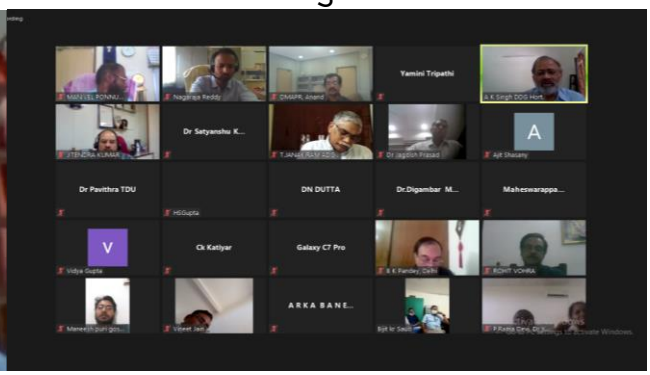

स्रोत कृषि ज्ञान :प्रबंधन इकाई भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद,गुजरात।